eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

अष्टछाप काव्य में नृत्य का शास्त्रीय पक्ष

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0 जी0 पी0 जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 08 April 2018, Accepted: 18 April 2018, Published on line: 30 April 2018

Abstract

प्राचीन साहित्य में रास और रास लीला के पर्याप्त पर उल्लेख मिलते हैं लेकिन अन्तिम रूप से उसके स्वरूप को निर्धारित कर पाने के अपर्याप्त हैं। प्राप्त वर्णनों में किसी निश्चित शास्त्रीय स्वरूप का उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि परम्परा–पुष्ट धार्मिक और दरबारी कला–प्रवृत्तियों के स्वास्थ्य समन्वय से कत्थक नृत्य शैली का जन्म हुआ है। चूँकि रास और कत्थक में पर्याप्त समानताएँ हैं, और वर्तमान कंत्थक अष्टछाप वर्णित रास के पदों पर सहज संप्रेषण है अतः कथक के आधार पर 'रास' के शास्त्रीय गुणों की खोज की जा सकती. है।

शब्द संक्षेप– प्राचीन साहित्य, रास, रास लीला, अष्टछाप काव्य, नृत्य का शास्त्री पक्ष।

Introduction

धार्मिक विश्वासों एवं किंवदन्तियों के आधार पर इस शैली का जन्म कृष्ण की प्रेरणा से हुआ जिसे बाद में 'डांस आफ इंडिया' के लेखक श्री बैंकटाचलम के अनुसार मुगल बादशाहों का संरक्षण एवं पोषण प्राप्त हुआ है। इस प्रकार कत्थक की उत्पत्ति के विषय में कोई शास्त्रोक्त प्रमाण नहीं मिलता है। अष्टछाप के प्रतिपाद्य विषय और शैलीगत विशेषाताएँ प्रकारान्तर में प्रकट होती है। कत्थक का प्रतिपाद्य स्वरूप भी श्रृंगारिक, मधुर, कोमल और गीत राग रंजित है।

इस शैली में एक ओर 'रास' के तत्वों के लोक–नृत्य शैली को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, दूसरी ओर विषय प्रायः (कृष्ण) लीला से सम्बन्धित है, साथ ही उसमें भारतीय नृत्य के परम्परागत तत्व भी विद्यमान है। अष्टछाप पदों में जिस प्रकार कई स्थलों पर लोक शैली का प्राधान्य हो गया है लेकिन उसकी आत्मा साहित्यिक ही रही उसी प्रकार कत्थक में अनेक स्थलों पर लोक तत्वों के प्राचर्य से उसकी आत्मा शास्त्रीयता और परम्परा से विमुख नहीं हो सकी है। कत्थक नृत्य–घरानों में प्रचलित विश्वास के अनुसार 'ईश्वरी जी' को स्वप्न में श्रीकष्ण ने नटवरी–नृत्य–रूप में भागवत रचने की आज्ञा दी। इस प्रकार नटवरी नृत्य का जन्म हुआ। कालान्तर में इसी का नाम कत्थक हो गया। कत्थक या कथक को पूर्व नाम 'नटवरी' से इसका सम्बन्ध कृष्णलीला में स्थापित होता है। विश्वास और किंवदंतियों से परे यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि कत्थक के बीच अष्टछाप कवियों की रचनाओं में समाहित है। 'कथन करे सो कत्थक कहिये' की परिभाषा वाले कत्थक के पद–संचालन, मंडलों के प्रयोग एवं रासलीला के पद–संचालनों और मंडल

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

प्रयोगों में अद्भुत साम्य है। कत्थक नृत्य शैली में पहले कविता पढ़कर उसका भाव प्रदर्शित किया जाता है और उसके नायक–नायिका प्रायः कृष्ण–राधा ही हैं। इस क्षेत्र में प्रयुक्त पदों में अधिकांशतः अष्टछापी पदों का ही प्रयोग होता हे। रास और कथक की परम्परा इसी से प्रमाणित होती है ब्रज मे अवशिष्ट रास परम्परा में मध्यकालीन नृत्य कला के दर्शन सहज ही हो जाते है। उसमें तथा कथक परम्परा में समानता से सिद्ध होता है कि भिन्न परम्पराओं के अनन्तर दोनों में एक सीमा एक एकरूपता है। उदाहरणार्थ रास में प्रयुक्त एक पद दृष्टव्य है।

नाचत रास में रास बिहारी, नचवतः हैं ब्रज की सब नारी।
तादनि तादनि तत तत थेई थेई थुगन थुगन देत गति न्यारी।
तिकट तिकट धिलांग धिक तक तोदीम धिलांग तक तो
ता धिलांग धिक धिलांग धिक तक तोदीम तोदीम धेताम धेताम ।
धिलांग धिलांग धिलांग तक गद गित थेई।
तत तता थेई तत तता थेई तत तता थेई।
तक तक तक थुन थुन जै जै ककक् कड़ान न कुजंय
गिड़ गिड़ ताता गिड़ ताता थुंगा गिड़ता गदगति थेई
तता तता थेई तत तता थेई तत तता थेई ।

उपर्युक्त बोल कत्थक के बोलों से बहुत मिलते हैं। अष्टछाप काव्य में रास प्रसंगान्तर्गत इस प्रकार के उद्धरण मिलते हैं–

ता ता थेई थेई उधटत हैं हरसि मन।
तत थेई थेई तत थेई करत गोपीनाथ।
ग्र ग्र ता ग्र ग्र ता तत तत तत थेई थेई।
ग्रग्र– ताता –थेई –थेई – थेई –थाट।

इससे यही स्पष्ट होता है कि कथक और रास के व्याकरण के कई स्तरों पर एकरूपता है। चतुर्भुजदास के श्रीकृष्ण की शास्त्रीय राग–रागिनियों में बँधी तानों के साथ कत्थक नृत्य के बोलों और मुद्राओं के थिरकते रूप दृष्टिगत होते हैं–

मदनमोहन रास मण्डल में मालव राग रस झारयो गावै,
औधर तान–बंधान,सात सुर–मधुर मधुर मुरलिका बजावै।
निर्तत सुलप लेत सच बहु विधि हस्तक भेद दिखावें,
उधटत शब्द तत थेई तत थेई जुवति–वृन्द मनदृमोद बढ़ावै।

कत्थक को निम्नलिखितानुसार तीन भागों में विभाजित किया जाता है :

1. नृत्त – अंग संचालन की प्रमुखता वाले इस अंग के बोल, परन, तुकड़ों को पैरों से निकाला जाता है। बोलों का पाठ तथा पक्षघात से बोलों की प्रतिध्वनि स्पष्ट होनी चाहिये।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol 01. Special Issue 02, April 2018

2. गत भाव :– इसमें प्रायः कृष्णलीलाओं के श्रृंगारिक पक्षों का प्रदर्शन किया जाता है साथ ही पद–संचालन का कौशल प्रदर्शित होता है जिसे तत्कार कहा जाता है।

3. अभिनय :– भाव–प्रदर्शन के साथ अभिनय को सम्मिलित करके भावपूर्ण पदों के साथ किये जाने वाले नृत्य अभिनय की कोटि में आते हैं। रास में ये सभी तत्व न्यूनाधिक मात्रा के साथ अभिनय को सम्मिलित करके भावपूर्ण पदों के साथ किये जाने वाले नृत्य अभिनय की कोटि में आते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हि0 सा0 को0, पृ० 444
2. 'हिन्दी साहित्य कोष, पृ0 384
3. 'हि0सा0 को०, पृ0 385
4. हिसा0 को0, पृ 386
5. सूरसागर 1769/655
6. परमानन्दसाग, 778/339
7. 'छीतस्वामी, 5/3
8. कुम्भनदास, कॉक, 42/24
9. ही0 सा0 को0 पृ0– 385